सुविचार

बड़प्पन एक ऐसा वृक्ष होता है।
जिसके नीचे न कोउ छोटा है।

जीवन चन्द्राकर 'लाल''
बोरसी 52 दुर्ग (छत्तीसगढ़)

संपादकीय

काले कारनामों पर पोती काली स्याही

इन दिनों दुनिया में एपस्टीन फाइल की बड़ी चर्चा है। दुनिया के देशों के राजनेता, बड़े-बड़े अधिकारी,कॉरपोरेट जगत के लोगों को प्रभावित करने के लिए खूबसूरत एवं नाबालिग लड़के-लड़कियों का एपशन सेक्सकर्मी के रूप में किया गया। इन्हें किस तरह से यौन अपराधियों और उनके दलालों द्वारा शिकंजे में लिया जाता था, इसके बाद दुनिया भर की राजसत्ता में बैठे लोगों के पद और प्रतिष्ठा का उपयोग किया गया। एपस्टीन दुनियाभर के राजनेताओं और कॉरपोरेट जगत को ब्लैकमेल करके दुनिया का पावरफुल आदमी बन गया था। अब एपस्टीन इस दुनिया में नहीं रहा। उसकी फाइल में दर्ज काले कारनामों के खुलासे हो रहे हैं। उससे सारी दुनिया के कई देशों के रास्ट्राध्यक्षों और कारपोरेट जगत का वह काला चेहरा आज सारी दुनिया को देखने को मिल रहा है। इस काले कारनामें में एपस्टीन जो यौन शोषण का सबसे बड़ा अपराधी था, जिसने छोटे-छोटे से बच्चों को अपने धंधे के लिए इस्तेमाल किया। दुनिया के बड़े-बड़े नेताओं कॉरपोरेट और बड़े-बड़े अधिकारियों को अपने द्वीप में ले जाकर उनको ऐश कराया। इस तरह की ऐश बड़े-बड़े धन्नासेठों को और कहीं उपलब्ध नहीं हो सकती थी। जिसके कारण एपस्टीन बहुत कम समय में दुनिया के कई देशों की सत्ता का सबसे बड़ा दलाल बन गया। इसमें कई देशों के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, ब्रिटेन के राजकुमार, खूबसूरत और वैश्विक धन्नासेठ जिसमें फिल्मी जगत के अभिनेता और अभिनेत्री भी शामिल थे। विभिन्न देशों के उद्योग, सत्ता, खेल और व्यापार जगत में इस दलाल की तूती बोलती रही। वासना के इस खेल में शामिल होने के बाद एपस्टीन के इसारे पर सारी दुनिया नाच रही थी। अमेरिका के न्याय विभाग ने इसका खुलासा किया है। इसके कंप्यूटर से 35 लाख से अधिक पेज, हजारों फोटो और हजारों वीडियो इस सच्चाई को बता रहे हैं। जेफरी एपस्टिन और उसके सहयोगी गिस्लैन मैक्सवेल के सेक्स रैकेट नेटवर्क में शामिल थे। इन दस्तावेजों में इलेक्ट्रॉनिक संदेश, हवाई जहाज की यात्राओं का रिकॉर्ड बैंक के माध्यम से हुए, सभी लेन-देन का रिकॉर्ड शामिल किया गया है। इसमें अमेरिका के वर्तमान राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का कई बार नाम सामने आया है। इसी तरह से भारत के भी आधा दर्जन से ज्यादा लोगों के नाम इस फाइल में दर्ज हैं। यह सारे दस्तावेज अब सार्वजनिक कर दिए गए हैं। आश्चर्य की बात यह है, कुछ ऐसे पेज हैं, जिनमें ट्रंप और कई महत्वपूर्ण नेताओं और अधिकारियों से जुड़ी हुई जानकारी थी। गवाही के जो दस्तावेज थे, उनमें से कई पेजों पर स्याही पोतकर उसकी जानकारी आम लोगों तक नहीं पहुंचे इसके प्रयास हुए हैं। अमेरिका के न्याय विभाग में जिन यौन पीड़िताओं ने गवाही दी थी, उनमें स्याही पोतने का मामला सामने आया है। इस जानकारी में काली स्याही पोत देने के कारण लगभग दो दर्जन दलालों और सप्लायरों की जानकारी नहीं मिल पा रही है। जिनके जरिए इस जांच को और इस अपराध में लिप्त लोगों को दंडित किया जा सकता था। अमेरिका के डेमोक्रेटिक सांसदों ने न्यायिक विभाग पर आरोप लगाया है। उन्होंने अमेरिकी कांग्रेस की समय-सीमा पर इस जानकारी को उजागर नहीं किया। जो जानकारी उजागर की है, उसमें बहुत सारी जानकारी पर काली स्याही से छुपाने का प्रयास किया है। ताकि पावरफुल लोगों को बचाया जा सके। अमेरिकी मीडिया में इस बात की बहस शुरू हो गई है।

न्याय विभाग से यह जानकारी मांगी जा रही है। यह जानकारी क्यों छुपाई गई है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का नाम जब बार-बार सामने आ रहा है, तब इसे एक साजिश बताकर खारिज करने का जो प्रयास किया जा रहा है, इसको लेकर अमेरिका में बड़ा विरोध शुरू हो गया है। एपस्टीन फाइल का खुलासा होने के पहले ही ब्रिटेन की प्रिंस एंड्रयू माउंटबेटन विंडसर ने अपनी पदवी छोड़ दी है। प्रिंस को एक महिला भेजी गई थी। गवाही में यह बात सामने आई है। स्लोवाकिया के प्रधानमंत्री के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार मिरोस्लाव लाईचक ने अपना इस्तीफा दे दिया है। उनके ऊपर आरोप थे, जब वह विदेश मंत्री थे, तब महिलाओं से बात की, और उनके साथ संपर्क में आए हैं। अमेरिका के वाणिज्य विभाग के सचिव हार्वर्ड लुटनिक की जानकारी का भी खुलासा हुआ है। 2012 में वह अपने परिवार के साथ एपस्टीन के प्राइवेट आईलैंड में जाने का आरोप है। जैफरी एपस्टीन को 2008 में फ्लोरिडा में 14 साल की लड़की को सेक्स के लिए उकसाने के मामले में दोषी ठहराया गया था, जिसमें उसे 2 साल की सजा हुई थी। उसके बाद से एपस्टीन ने अपने नेटवर्क को बड़ी तेजी के साथ बढ़ाया। अमेरिकी मीडिया का दावा है, इजराइल की खुफिया एजेंसी मोसाद के एजेंट के रूप में एपस्टीन यह काम कर रहा था। इजराइल और अमेरिका अपने हितों के लिए दुनिया के विभिन्न देशों में एपस्टीन का उपयोग कर रहे थे। इसके माध्यम से दुनिया के व्यापार और सत्ता को नियंत्रित करने का काम इजराइल और अमेरिका कर रहे थे। अमेरिका और इजराइल के इशारे पर भारत पश्चिम एशिया के देश ईरान, सऊदी अरब, मालदीव एवं दुनिया के महत्वपूर्ण देशों में एपस्टीन का जाल फैला हुआ था। जो जासूसी के साथ-साथ वैश्विक व्यापार और राजसत्ता को अप्रत्यक्ष रूप से संचालित करने का काम होता था। जासूसी के नेटवर्क में राजा महाराजाओं के राज में विषकन्याओं का जिस तरह से उपयोग किया जाता था, आधुनिक युग में वही काम एपस्टीन कर रहे थे। यौन तस्करी के माध्यम से अपने द्वीप में दुनियाभर की खूबसूरती और सेक्स के विभिन्न आयाम को लेकर जिस तरह से दुनिया के सभी देशों के पूंजीपतियों, राजनेताओं, और दुनिया के बड़े-बड़े लोगों को अपने जाल में फंसाकर अमेरिका और इजराइल के लिए काम किया, सत्ता की दलाली करके अरबों - खरबों रुपए की कमाई करने का नया मॉडल जैफरी एपस्टीन ने तैयार किया था। उसका अंत उसकी आत्महत्या के साथ हुआ है। जब उस पर भगवान की मार पड़ी, तब अमेरिका की जेल में वह आत्महत्या करने को विवश हुआ। उसकी मौत के बाद जो भी लोग इस अपराध में लिप्त थे, जिन लोगों ने छोटे-छोटे बच्चों का यौन शोषण किया, अब उन्हें सजा भुगतने के लिए तैयार रहना होगा। कहते हैं, जो बोते हैं, उसकी ही फसल होती है। उसी फसल को काटना पड़ता है। दुनियाभर के धन्नासेठों ने पिछले 15 वर्षों में जो बोया था. अब उसकी फसल लहलहाने लगी है। अपराधों की सजा किस रूप में हो, कैसे मिलेगी.यह आने वाला समय तय करेगा।

विकास के वर्चुअल वादे और बेरोज़गारी की कड़वी हकीकत

जनता का आर्थिक लेखा-जोखा: राकेट गति से बढ़ती भारतीय अर्थव्यवस्था के दावों के बीच इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट और हाई स्किल डिग्री लेने वाले लाखों लोग बेरोजगार हैं। शहरी बेरोजगारी दर लगभग सात प्रतिशत तक पहुँच चुकी है। दूसरी ओर 18 से 30 वर्ष आयु वर्ग के युवाओं में बेरोजगारी दर करीब 12 प्रतिशत रही। शोधकर्ताओं ने यह भी दर्ज किया कि उच्च शिक्षा प्राप्त युवाओं में बेरोजगारी की दर इससे भी अधिक थी। यदि वास्तव में विकास हो रहा है, तो भारत किस दिशा में आगे बढ़ रहा है? गिनेचुने क्षेत्रों में विकास हुआ है और जीडीपी के आंकड़े बढ़े हैं, लेकिन इसके साथ बेरोजगारी और असमानता भी बढ़ी है, जिस पर न तो पर्याप्त ध्यान जाता है और न ही शायद जानबूझकर दिया जाता है। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम की रिपोर्ट बताती है कि भारत की अधिकांश कामकाजी आबादी अपने क्षेत्र के बुनियादी शिक्षा और प्रशिक्षण से वंचित है। नतीजतन कंपनियां कुशल उम्मीदवारों की कमी का रोना रोती हैं और दूसरी तरफ युवा बेरोजगारी की मार झेलते हैं।

भारत के विकास, उसकी आर्थिक गति या वैश्विक स्तर पर सबसे मजबूत अर्थव्यवस्था बनने की ओर बढ़ने के दावों के बरअक्स हाल में कुछ ऐसी हकीकतें सामने आई हैं, जो चौंकाने वाली और झकझोर देने वाली हैं। बड़े-बड़े निवेश, विकास दर और विशाल परियोजनाओं की परत चढ़ाकर बढ़ती रोजगार संभावनाओं को वर्चुअल विकास के वादों के रूप में पेश किया गया है। एक ओर भारत को सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बताने के काग़जी और पोस्टरस्तरीय प्रयास हो रहे हैं, वहीं जमीनी सच्चाई यह है कि शिक्षित युवाओं में बेरोजगारी लगातार बढ़ रही है। इसके साथ अस्थिर रोजगार और घटती आय भी युवाओं के भविष्य पर बड़ा सवाल खड़ा कर रही है।

श्रम मंत्रालय और नेशनल स्टैटिस्टिकल आफिस के आंकड़े बताते हैं कि देश के शहरी इलाकों में बेरोजगारी दर लगातार बढ़ रही है। इससे युवाओं, खासकर शिक्षित युवाओं के लिए नई चुनौतियां पैदा हो रही हैं। ये आंकड़े उस वास्तविकता का विरोधाभास हैं, जिसे लंबे समय से विकास के आवरण में पेश किया जा रहा है। जानकारों के अनुसार, देश की 65 प्रतिशत से अधिक आबादी 45 वर्ष या उससे कम उम्र की है। दूसरी ओर हर साल एक करोड़ से ज्यादा युवा रोजगार की तलाश में बाजार में उतरते हैं। हर साल एक करोड़ लोगों को रोजगार तभी मिल सकता है, जब अर्थव्यवस्था सही और गुणवत्तापूर्ण ढंग से आगे बढ़े और रोजगार के अवसर पैदा करे। हकीकत यह है कि संगठित क्षेत्र में नई नौकरियों की संख्या बेहद सीमित है, जिसके कारण लाखों युवाओं को रोजगार नहीं मिल पाता।

दो साल पहले यानी 2024 में आए पीरियाडिक लेबर सर्वे के निष्कर्षों से स्पष्ट था कि तब भी शहरी बेरोजगारी दर लगभग सात प्रतिशत तक पहुंच चुकी थी। 18 से 30 वर्ष आयु वर्ग के युवाओं में बेरोजगारी करीब 12 प्रतिशत थी। शोधकर्ताओं ने यह भी दर्ज किया कि उच्च शिक्षा प्राप्त युवाओं में बेरोजगारी की दर इससे अधिक थी। इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट और ग्रेजुएशन जैसी डिग्रियां लेने वाले लाखों लोग काम की तलाश में भटक रहे थे और आज भी भटक रहे हैं। कई बार उन्हें अपनी योग्यता से कम वेतन पर अस्थाई और कठोर शर्तों वाली नौकरियां स्वीकार करनी पड़ती हैं। इससे आर्थिक असुरक्षा पैदा हो रही है, जिसके चलते सामाजिक असंतोष और मानसिक दबाव भी बढ़ रहा है।

यह समस्या सिर्फ शहरों तक सीमित नहीं है। ग्रामीण भारत में भी रोजगार की स्थिति गंभीर है। खेती पर निर्भर आबादी आज भी लगभग 45 प्रतिशत है, जबकि जीडीपी में कृषि का योगदान 15 प्रतिशत से भी कम रह गया है। किसानों की आय बढ़ाने के सरकारी दावे और वादे खोखले साबित हुए हैं। किसानों की आमदनी में वास्तविक बढ़ोत्तरी नहीं हुई और कम उत्पादकता वाले वैकल्पिक कामों की ओर ग्रामीण आबादी का झुकाव बढ़ रहा है। जानकार मानते हैं कि देश के अधिकांश किसानों और उनके परिवारों की मासिक आय आज भी सम्मानजनक और सुविधाजनक जीवन के लिए पर्याप्त नहीं है। नतीजतन युवा गांव छोड़कर शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं।

पिछले एक दशक में सरकार ने रोजगार बढ़ाने और बेरोजगारी घटाने के लिए कई योजनाएं शुरू कीं, कौशल विकास मिशन, आत्मनिर्भर भारत जैसे कार्यक्रम। इनके जरिए नई नौकरियों और उद्यमिता बढ़ने के दावे किए गए। स्टार्टअप इंडिया के तहत दो लाख से अधिक नए उद्यमों का पंजीकरण हुआ और उनसे लाखों रोजगार पैदा होने की बात कही गई। लेकिन वास्तविकता यह है कि इन रोजगारों का बड़ा हिस्सा अस्थाई, योजना आधारित और डिजिटल माध्यमों से जुड़ा है। सामाजिक सुरक्षा, दीर्घकालिक स्थिरता और निश्चितता का अभाव बना हुआ है। कई स्टार्टअप्स का 'बाल-मरण' भी हो चुका है, जिसकी न चर्चा होती है और न पारदर्शी जानकारी मिलती है।

एक और चौंकाने वाली सच्चाई यह है कि भारत का मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर अपेक्षित विकास नहीं कर पाया। इसे अर्थव्यवस्था और रोजगार सृजन का इंजन माना जाता है, लेकिन जीडीपी में इसका योगदान लगभग 16 प्रतिशत के आसपास ही है। चीन, वियतनाम और बांग्लादेश जैसे देशों की तुलना में भारत इस क्षेत्र में पीछे दिखाई देता है। उद्योग जगत के अनुसार, श्रम कानूनों की जटिलता, भूमि अधिग्रहण की कठिनाइयां, बुनियादी ढांचे की कमी, भ्रष्टाचार, वैश्विक प्रतिस्पर्धा और सरकारी समर्थन का अभाव, ये सब मिलकर दबाव पैदा कर रहे हैं। इसका सीधा असर रोजगार सृजन पर पड़ रहा है और मैन्युफैक्चरिंग में नौकरियां घट रही हैं।

महिलाओं की बेरोजगारी भी एक गंभीर चिंता है। शिक्षित और योग्य होने के बावजूद आर्थिक, पारिवारिक और सामाजिक कारणों से उन्हें काम से दूर रखा जाता है या रोजगार ही नहीं मिलता। विशेषज्ञ मानते हैं कि महिलाओं को पर्याप्त रोजगार मिलने पर रोजगार की परिभाषा विस्तृत होगी और आर्थिक विकास में उनका योगदान बढ़ेगा।

सरकारी विज्ञापनों में रोजगार को प्राथमिकता देने की बात बारबार होती है, लेकिन बजट आवंटन, संसाधनों की हिस्सेदारी और अमल में यह प्राथमिकता नजर नहीं आती। शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास पर खर्च आज भी जीडीपी के अनुपात में बहुत कम है। अंतरराष्ट्रीय तुलना में इन क्षेत्रों में भारत का निवेश बेहद कम है। मानव संसाधन में ठोस निवेश के बिना रोजगार सृजन संभव नहीं और तब घोषित योजनाओं की सफलता भी संदेह में रहती है। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या भारत सचमुच दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है? अगर विकास हो रहा है, तो उसकी दिशा क्या है?

गिनेचुने क्षेत्रों में विकास और बढ़ते जीडीपी आंकड़ों के समानांतर बेरोजगारी और असमानता बढ़ रही है और इस पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जा रहा।

खास बात यह है कि बेरोजगारी सिर्फ आर्थिक समस्या नहीं है, इसके कारण और प्रभाव सामाजिक व राजनीतिक भी हैं। असुरक्षित रोजगार और बेरोजगारी में फंसे लाखों युवा अपने भविष्य को लेकर बेहद चिंतित हैं। प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में भीड़ बढ़ रही है, वहीं पेपर लीक, परीक्षाओं का रद्द होना और भर्ती प्रक्रियाओं में देरी समस्या को और गहरा रही है। कई राज्यों में बेरोजगारी के चलते हिंसक प्रदर्शन भी देखने को मिल रहे हैं। लाखों युवाओं का सड़कों पर उतरना बताता है कि रोजगार अब केवल आंकड़ों का विषय नहीं रहा, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक चुनौती बन चुका है।

कुछ लोग मानते हैं कि सेवा क्षेत्र ने अर्थव्यवस्था को सहारा दिया है, लेकिन रोजगार का स्वरूप बदल गया है। आईटी, आधुनिक सेवाओं और हाईस्किल क्षेत्रों में रोजगार है, पर उसका आकार सीमित है। आज अर्थव्यवस्था संचार, डिजिटल सेवाओं, आईटी, एआई, परिवहन आदि जैसे सेवा क्षेत्रों पर टिकी है, जहां छोटे-मोटे काम अधिक हैं। शिक्षा व्यवस्था और रोजगार के बीच की खाई लगातार बढ़ रही है। हर साल लाखों स्नातक, परास्नातक और पेशेवर डिग्रीधारी बाजार में आते हैं, लेकिन उद्योग उन्मुख प्रशिक्षण और व्यावहारिक ज्ञान के अभाव में उन्हें रोजगार नहीं मिल पाता या सीमित अवसर मिलते हैं। राष्ट्रीय कौशल विकास निगम की रिपोर्ट भी यही कहती है कि अधिकांश कामकाजी लोग अपने क्षेत्र के बुनियादी प्रशिक्षण से वंचित हैं, इसी से एक ओर कंपनियां कुशल लोगों की कमी की शिकायत करती हैं और दूसरी ओर युवा बेरोजगार रहते हैं।

स्नेहा सिंह
जेड-436ए, सेक्टर-12,
नोएडा-201301 (उ.प्र.)

पैसों का पेड़

हरे समय की सबसे बड़ी खोज पैसों का पेड़ है। यह अलग बात है कि किसी ने इसे देखा नहीं, लेकिन हर कोई इसके नीचे बैठा ज़रूर है। कुछ लोग इसकी छाया में योजनाएँ बना रहे हैं, कुछ इसकी जड़ों में रिश्ते गाड़ चुके हैं और कुछ लोग रोज़ इसे सींचते-सींचते खुद सूख गए हैं।

व्यंग्य
अरण्यरोदन

यह पेड़ सरकारी फाइलों में, कॉरपोरेट स्लाइड्स में और पारिवारिक बातचीत के बीचों-बीच उगता है। शादी तय करनी हो तो पहले देखा जाता है कि लड़के के यहाँ पैसों का पेड़ कितना पुराना है। बच्चे की पढ़ाई की बात हो तो सवाल यह नहीं होता कि बच्चा क्या बनना चाहता है, सवाल यह होता है कि इस कोर्स में फल कितने लगेंगे।

इस पेड़ की खेती आधुनिक साधनों से होती है– क्रेडिट कार्ड, लोन, श्रद्धा और भविष्य की तनखवाह। आदमी आज मेहनत इसलिए नहीं करता कि आज का जीवन बेहतर हो, बल्कि इसलिए करता है कि कल का बैंक बैलेंस दूसरों को छोटा लगे। वर्तमान को गिरवी रखकर भविष्य खरीदा जा रहा है, और भविष्य आते-आते ब्याज समेत वर्तमान को लौटा देता है।

दिलचस्प यह है कि यह पेड़ सबको दिखाई देता है, पर किसी को इसकी जड़ नहीं दिखती। जड़ में भय है–पीछे रह जाने का भय, कमतर कहलाने का भय, और सबसे बड़ा भय यह कि कहीं समाज हमें असफल घोषित न कर दे। इसलिए लोग मुस्कराते हुए इस पेड़ के चारों ओर चक्कर लगाते हैं, जबकि भीतर से थके हुए होते हैं।

इस पेड़ की पत्तियाँ बहुत शोर करती हैं। हर नई चीज़ की घोषणा होती है–नई कार, नया फोन, नई विदेश यात्रा। लेकिन जब पत्ते गिरते हैं, तब पता चलता है कि नीचे खड़ा आदमी अकेला है। रिश्ते समय के अभाव में झड़ चुके हैं और स्वास्थ्य 'अगले महीने देखेंगे' की सूची में पड़ा है।

विडंबना यह है कि पैसा जीवन को आसान बनाने के लिए था, पर अब जीवन पैसा बनाने की प्रक्रिया बन गया है। आदमी सुबह उठता है तो अलार्म नहीं, जिम्मेदारियाँ बजती हैं। रात को सोता है तो सपने नहीं, लक्ष्य चलते हैं। बीच में कहीं जीवन था, जो शायद नेटवर्क न होने के कारण डाउनलोड नहीं हो पाया।

कभी-कभी लगता है कि पैसों का पेड़ सच में होता तो बेहतर होता। कम से कम लोग उसके नीचे बैठकर यह तो मानते कि यह पेड़ है, जीवन नहीं। अभी तो हाल यह है कि लोग पेड़ को ही जंगल समझ बैठे हैं।

और जब कोई बूढ़ी आवाज़ कहती है कि बेटा, ज़िंदगी भी ज़रूरी है–तो जवाब मिलता है,

'अभी समय नहीं है, पैसों का पेड़ लगाना है।'

प्रकाश नीरव

तुम्हारी फाइलों का मौसम झूठा है

अभी कश्मीर फइल्स
देखकर रंज और गम मेरा
हल्का न हुआ था कि यह
नामुराद फाइल बेमौसम
टपक पड़ी। ऐसा लग रहा
सब मेरे शेर के पीछे हाथ
धोकर नहीं नहा धोकर पड़े
हैं– मेरा शेर–ताकतवर
बब्बर शेर है–भक्तों का
अराध्य, आदरणीय,
पूजनीय वंदनीय है– उसका
नाम किसी ऐरी–गैरी
फाइल से जोड़ा जाना
कितना तकलीफदेह है।

व्यंग्य
तीसरी आँख

कितना पीड़ादायक है, मैं किसी मुंह से बता नहीं सकता? इसमें जरुर अंतरराष्ट्रीय स्तर की साजिशें हैं- दुनिया भर की आँखों में हमारे शेर का यश और वैभव खरकने लगा है- इसीलिए पाखंडी जलनखोर हरामखोर हमारे महामानव युगपुरुष का नाम बेमतलब की फाइल से जोड़-गाँठ रहे हैं- जो 18-18 घंटे देश के लिए दिन-रात काम करता हो-दिन में पचास पोशाकें बदल कर सैकड़ों मीटिंगें करता हो-अपना घर-बार सब देश के लिए छोड़ रखा हो-ऐसा महात्यागी ,महाज्ञानी, महाध्यानी मोर प्रिय यानि सब प्राणियों के प्रिय महामानव का नाम किसी ऐरी-गैरी नीली-पीली फाइल से जोड़ना बहुत ही ,गलत ही नहीं, निहायत ही निंदनीय है। मैं इसकी कड़ी-और सबसे बड़ी निंदा करता हूँ- जिसे देश के कार्यों से, अपने लिए तिल भर फुरसत न मिलती हो, जो देश के कार्यों में इतना मशरूफ हो कि जिसे अपनी मूलभूत भौतिक रासायनिक क्रियाओं को निपटाने की भी तनिक सुध न रहती हो, फिर उसका नाम किसी विलासिता की फाइल में घसीटा जाना, उनके प्रशंसकों ,भक्तों को चुल्लू भर पानी में डूब मरने के सामान है। इसमें जरूर खालिस्तानी पाकिस्तानी ताकतों की साजिशें हैं जिन्हें नेस्तनाबूद करने के लिए हम सबको एकजुट होकर खड़े होना पड़ेगा, जैसे यूजीसी के खिलाफ खड़े हुए थे।

सुरेश सौरभ
निर्मल नगर लखीमपुर खीरी
उत्तर प्रदेश-262701
स्वरचित मौलिक
अप्रकाशित

हुक्का-वार्ता

चौपाल पर दो हुक्के पड़े थे। दोनों पुराने थे–इतने पुराने कि इतिहास उन्हें पहचानता था, पर वर्तमान उनसे कतराता था। एक की चिलम में बीते ज़माने की राख जमी थी, दूसरे की नली में राजनीति की नमी। हवा ठंडी थी, पर माहौल में गरमाहट थी–वो गरमाहट जो सिर्फ जाति और सत्ता के मेल से पैदा होती है।

हुक्का नंबर एक ने गला साफ़ किया–

'सुना है भाई, सरकार फिर से लोगों को उनकी जाति याद दिलाने में लगी है।'

हुक्का नंबर दो ने गुड़गुड़ाहट भरी–

'तो इसमें नई बात क्या है? भूल गए थे क्या लोग?'

हुक्का नंबर एक भावुक हो उठा–

'हाँ यार, लगता है हमारे दिन फिरेंगे। एक ज़माना था जब हमारी कितनी पूछ थी! हर जाति का अलग हुक्का, अलग शान। ऊँची जात वालों के हुक्के तो जैसे राजमहल की शोभा–मीनाकारी, फुँदे, चाँदी की नली। जमींदार जब मूँछें पर ताव देते हुए हमें गुड़गुड़ाते थे, तो लगता था जैसे हम नहीं, लोकतंत्र चल रहा है।'

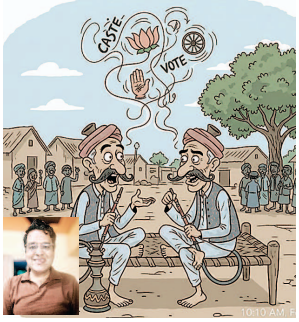

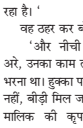

वह ठहर कर बोला–

'और नीची जात वाले? अरे, उनका काम तो बस चिलम भरना था। हुक्का पकड़ने का हक़ नहीं, बीड़ी मिल जाए तो उसे भी मालिक की कृपा मानते थे। पंचायत में जब हुक्का पानी बंद होता था, तो आदमी नहीं–उसकी जात बाहर होती थी।'

हुक्का नंबर दो ने सहमति में धुआँ छोड़ा–

'हाँ, वही दिन थे जब इंसान से ज़्यादा उसकी जात की सांस चलती थी।'

हुक्का नंबर एक आगे बढ़ा–

'फिर धीरे-धीरे बदलाव आया। बराबरी, समानता, लोकतंत्र–इन शब्दों ने हमारी चिलम ठंडी कर दी। हुक्कों का सार्वजनीकरण हो गया। अब कोई भी गुड़गुड़ा ले–जिसकी सात पुश्तों ने हुक्का देखा भी नहीं, वो भी। पंचायतें खत्म, जमींदार गायब, शराब ने हमारी जगह ले ली। हम चौराहों की शोभा बन गए–प्रदर्शनी के सामान। और जो बचे-खुचे रईसी हुक्के थे, वो म्यूज़ियम में रख दिए गए–जहाँ लोग उन्हें देखकर अपनी विरासत पर रोते थे।'

व्यंग्य
वक्रासन

वह तंज़ से हँसा–

'कहते थे–'ये हमारे दादा-परदादा का हुक्का है, जब चलता था तो लोग जूते सिर पर रख लेते थे।''

हुक्का नंबर दो ने चुटकी ली– 'अब जूते सर पर रखे नहीं चलाये जाते हैं।'

हुक्का नंबर एक जैसे चौंक पड़ा–

'हाँ! यही तो। अब नेता हमें लेकर झुग्गियों में पहुँच जाते हैं– 'लो, गुड़गुड़ा लो हुक्का, बस वोट दे देना।'थमा दिए हैं जातिगत गौरव के मांडने और फुंदे लगे हुक्के। इतिहास में दफ़न दमन की आग से वैमनष्यता का धुआ छोड़ा जा रहा है'

हुक्का नंबर दो प्रसन्न था–

'तो दुखी क्यों है भाई? देख, हमें फिर से अलग-अलग बाँटा जा रहा है। हर जाति को उसका हुक्का, हर हुक्के का अपना खेमा। अब राजनीति हुक्कों से चलेगी। जिसके पास जितने हुक्के, उसे उतने टिकट। संख्या बल का लोकतंत्र–हुक्का संस्करण।'

हुक्का नंबर एक की आवाज़ में डर था–

'यही तो चिंता है। जब हम चौराहे पर थे, तब तक ठीक था। म्यूज़ियम में सड़ जाते तो भी ग़म न था। पर अब ये बँटवारा... अब हुक्के आपस में लड़ेंगे। एक-दूसरे की नली खींचेंगे, चिलम फोड़ेंगे। अफ़वाहें फैलेंगी–किस हुक्के का धुआँ शुद्ध है, किसमें मिलावट।' वह धीरे बोला–

'अब तंबाकू नहीं, जाति-भेद, रंग-भेद, क्षेत्र-भेद पीया जाएगा। गुड़गुड़ाहट नशा बनेगी और लोग अंधे। फिर बताओ भाई–इस देश का क्या होगा?'

हुक्का नंबर दो ने अंतिम कश लिया–

'जो होगा, देखा जाएगा। हमारा काम तो बस गुड़गुड़ाना है। कम से कम कोई हमें याद तो कर रहा है। नाम तो ले रहा है। इस दौर में इतना ही बहुत है।'

दोनों हुक्के चुप हो गए।

चौपाल पर धुआँ तैर रहा था–इतिहास, जाति और राजनीति का मिला-जुला धुआँ।

भविष्य साफ़ नहीं था, पर गुड़गुड़ाहट जारी थी।

-डॉ मुकेश असीमित
Gangapur City
rajasthan